कुछ खट्टी कुछ मीठी

घूरन बिहार के सुपौल जिले के सुपौल प्रखंड का एक ऐसा पंचायत है जिसका भूगोल व इतिहास परिवर्तनषील रहा है। यह कोषी के पूर्वी व पष्चिमी तटबंध के बीच अवस्थित है। इसके सभी मौजे बांध के भीतर अवस्थित है। इसका एक मौजा निर्मली लगभग पूरी तरह से कोषी के गर्भ में समा चुका है। यूँ तो यह मुस्लिम बाहुल्य पंचायत है, लेकिन दलित एवं अन्य पिछड़े वर्गों के अनेक परिवार यहां बसते हैं। अतः मिश्रित ग्रामीण संस्कृति यहां की विरासत है। तटबंधों के बीच अवस्थित होने की वजह से न तो यहां पक्की सड़कें हैं और न ही विद्युतीय तार। मध्य विद्यालय से उच्च षिक्षा अभिक्रम का भी नितान्त आभाव है।

मेघ पाईन अभियान ने द्वितीय चरण में इस पंचायत में कार्य करना आरंभ किया। सुरक्षित पेयजल सबको सब जगह हमेषा उपलब्ध हो यही इसका लक्ष्य है। इस संदर्भ में अनेक दृष्टि से उपयोगी परंपरागत जल स्त्रोत कुआं का संवर्द्धन व संरक्षण इसके महत्वपुर्ण कार्यक्रमों में से एक है। मेघ पाईन अभियान ने स्थानीय संस्था ग्राम्यषील के सहयोग से अन्य पंचायतों के साथ इस पंचायत का भी सामाजिक सर्वेक्षण किया। यहां की जल संस्कृति का सूक्ष्म अध्ययन किया। साथ ही जल तारा कीट के द्वारा जल विषेषज्ञों की मदद से जल स्त्रोतों में विद्यमान 13 प्रकार की परामीटर को भी अपनाकर अध्ययन किया गया। कुएं का संरक्षण व संवर्धन इसकी रणनीति का अहम अंष है।

मेघ पाईन अभियान ने अपने तृतीय चरण में पांच पंचायत में प्रत्येक पंचायत के दो–दो कुआं का जीर्णोद्धार की योजना बनाई। घूरन पंचायत से भी दो कुआं की मरम्मती होनी थी। घूरन में 02 ही कुएं है, एक गांव से दूर कब्रगाह व खेती लायक जमीन के पास तथा दूसरा घुरन दलित टोला में। आवादी की उपयोगिता को देखते हुए दलित टोला का कुआं काफी महत्वपूर्ण है। घूरन पंचायत में कार्यरत कार्यकर्ता श्रीमती पूनम व श्री शम्भूनाथ ने कुआं के मालिक श्री दुखी साह से बातचीत किया, कई दौर की बातचीत से यह निष्कर्ष निकल चुका था कि इस कुआं का जीर्णोधार टेढी खीर है।

कुआं मालिक साह दम्पत्ति एक अच्छा खासा परिवार है, लेकिन सबकुछ रहने के बाबजूद लालच से वे छूट नहीं पाए हैं। फिर कुआं के स्थान पर चापाकल की सुविधा व चलन के पूर्वाग्रह को मिटाना मुस्किल था। तटबंध के भीतर कुआं की संख्या कम ही है। घूरन में तो केवल दो कुआं ही देखे जाते। इस कुआं के प्रति मोह होना और इसे उपयोगी बनाना मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता के लिये अति उत्साह का विषय था। घ ानी आबादी में एक मात्र कुआं होने के कारण मुखिया का ध्यान भी इस कुएं पर था। साह दम्पत्ति उसे एक फायदा का माध्यम समझ मुखिया व मेघ पाईन अभियान के दोनों से ही फन्ड प्राप्त कर अपनी इच्छानुसार मरम्मती करने की मनसा बनाए थे। मुखिया ने तो मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता श्रीमती पूनम को कुआं का मरम्मत ग्राम पंचायत द्वारा होगा, लिख कर दे दिया था। ऐसी परिस्थिति में कुएं का सही अर्थों में पुनर्निर्माण काफी मुस्किल कार्य था।

मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता व विकास सहायक के अनवरत प्रयास से परिस्थितियाँ बदली, कुआं निर्माण हेतु वातावरण का निर्माण हुआ। मुखिया सहित जल

विकास समिति का निर्णय हुआ कि इस कुआं का जिर्णोद्धार मेघ पाईन अभियान के द्व ारा हो। अभियान के अभियंता ने कुआं का बजट तैयार किया, स्वयं उन्होंने मिट्टी भी भराई, कुएं के भीतरी भाग की सफाई भी करवाए, फिर प्लास्टर भी हुआ, कुआं की दीवार अत्यधिक उभर–खाभर युक्त होने की वजह से प्लास्टर सामग्री बजट से अधिक खर्च हुआ। बालू का आभाव हो गया, बहुत मुस्किल के बाद बालू उपलब्ध करवाया गया। इस संदर्भ में श्री शम्भू नाथ (कुआं मरम्मती के मुख्य जिम्मेवार) की भूमिका सराहनीय रही। जगत की उँचाई बढाई गई। चबूतरे का सोलिंग हुआ, बैठने के लिये बेंच बना और एक तुलसी चौड़ा का भी निर्माण किया गया। सभी का प्लास्टर किया गया, लेकिन मेघ पाईन अभियान की पूर्व योजनानुसार उसमें पुली नहीं लगाया जा सका, क्योंकि दुखी साह की पत्नी श्रीमती इजोती देवी अब भी असहयोगात्मक व्यवहार में थी। सौभग्य से अब पुली के जगह मेघ पाईन अभियान ने ढेकुल व कड़ी लगाने की योजना बनाई है। हाँ! नाला बनकर तैयार है। इन सारे कार्यों की सफलता में अभियान के अभियंता श्री अरविन्द कुमार तिवारी का सहयोग स्मरणीय है। कुआं बना लेकिन कुआं की उड़ाही जलस्तर के उपर होने के कारण नही हो सका है, जिसे 15 नवम्बर तक उड़ाही कर कुआं का व्यवहार आरंभ हो जाएगा। 2010 की बाढ़ की बिभिषिका में भी कुआं का ऊपरी हिस्सा नहीं डुबा। बाढ़ में कुआं के चारो बगल पानी का वेग रहने से कुआं का चबूतरा आंषिक रुप से क्षतिग्रस्त हुआ है, जिसे भी 15 नवम्बर से पूर्व पूरा कर लिया जाएगा।